

## श्रीमद्भागवत नवम स्कन्ध अध्याय 16: परशुराम

28 September 2026



### पाठ से पहले एक निवेदन

श्रीमद्भागवत महापुराण के ये अध्यायवार सार गीता प्रेस भागवत को मुख्य आधार मानकर तैयार किए गए हैं। ये भागवत के अध्ययन में सहायक हैं, मूल ग्रंथ का स्थान नहीं ले सकते।

अध्ययन का मुख्य और अनुशंसित मार्ग गीता प्रेस की भागवत पुस्तक से सीधा पाठ है। यात्रा में, घर से दूर, या जब पुस्तक पास न हो, तब निरंतर अध्ययन, पुनरावृत्ति और समझ के लिए इन सारों का सहारा लिया जा सकता है।



अपना भयंकर कार्य समाप्त करके, भगवान् परशुराम आज भी महेन्द्र पर्वत पर विराजते हैं — उनका अस्त्र त्यागा हुआ, उनका मन पूर्णतः शान्त, उनकी महिमा सिद्धों, गन्धर्वों एवं चारणों द्वारा गाई जाती हुई।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

श्रीमद्भागवत विज्ञम में आपका स्वागत है — श्रीमद्भागवत महापुराण की पवित्र कथाओं एवं शिक्षाओं की एक श्रद्धापूर्ण यात्रा। नवम स्कन्ध का यह सोलहवाँ अध्याय भगवान् परशुराम की कथा को पूर्ण करता है — एक पिता की कठिनतम आज्ञा से लेकर एक योद्धा के प्रचण्डतम क्रोध तक, और अन्ततः एक पूर्ण हुए मिशन की शान्ति तक।

## अध्याय-पारेचय

- ग्रन्थ: श्रीमद्भागवत महापुराण
- स्कन्ध: 9 (नवम स्कन्ध)
- अध्याय: 16 (षोडश अध्याय)
- अध्याय शीर्षक: भगवान् परशुराम द्वारा क्षत्रिय-वंश का संहार
- मुख्य वक्ता: श्री शुकदेव गोस्वामी, राजा परीक्षित को कथा सुनाते हुए — सम्पूर्ण कथा सूत गोस्वामी द्वारा नैमिषारण्य में शौनक ऋषि एवं ऋषि-समुदाय को सुनाई गई
- मुख्य श्रोता: राजा परीक्षित
- मुख्य स्थल: ऋषि जमदग्नि का आश्रम; माहिष्मती एवं समन्तपञ्चक (कुरुक्षेत्र); महेन्द्र पर्वत; विश्वामित्र का वंश
- केन्द्रीय विषय: परशुराम का आज्ञापालन एवं वरदान, जमदग्नि की हत्या, अत्याचारी क्षत्रिय-राजाओं से पृथ्वी की मुक्ति, जमदग्नि का पुनर्स्थापन, और विश्वामित्र का वंश
- मुख्य श्लोक-परास: नवम स्कन्ध, अध्याय 16, श्लोक 1-37
- मुख्य संस्करण: गीता प्रेस श्रीमद्भागवत महापुराण

## आज्ञापालन और पुनर्जीवन का वरदान

राजा कार्तवीर्य अर्जुन के वध का प्रायश्चित्त करने की अपने पिता की आज्ञा पाकर, परशुराम एक वर्ष तीर्थयात्रा करके लौटे। एक दिन उनकी माता रेणुका, जल के लिए नदी जाते हुए, गन्धर्वराज चित्ररथ को अप्सराओं के साथ क्रीड़ा करते देखकर एक क्षण के लिए मोहित हो गई, और इस प्रकार आहुति-अर्पण के समय लौटने में विलम्ब कर बैठीं। अपनी पत्नी के मन के इस विचलन को जानकर, क्रुद्ध ऋषि जमदग्नि ने अपने पुत्रों को उसका वध करने का आदेश दिया; किन्तु केवल परशुराम ने, जो अपने पिता की तपस्या की शक्ति को भली-भाँति जानते थे, आज्ञा का पालन किया, और अपने पिता के आग्रह पर अपनी माता एवं भाइयों के प्राण ले लिए। उनके आज्ञापालन से प्रसन्न होकर, जमदग्नि ने उन्हें वर देने को कहा — और परशुराम ने माँगा कि जिन्हें उन्होंने मारा है वे पुनर्जीवित हो जाएँ, बिना इस स्मृति के कि वे मारे गए थे।

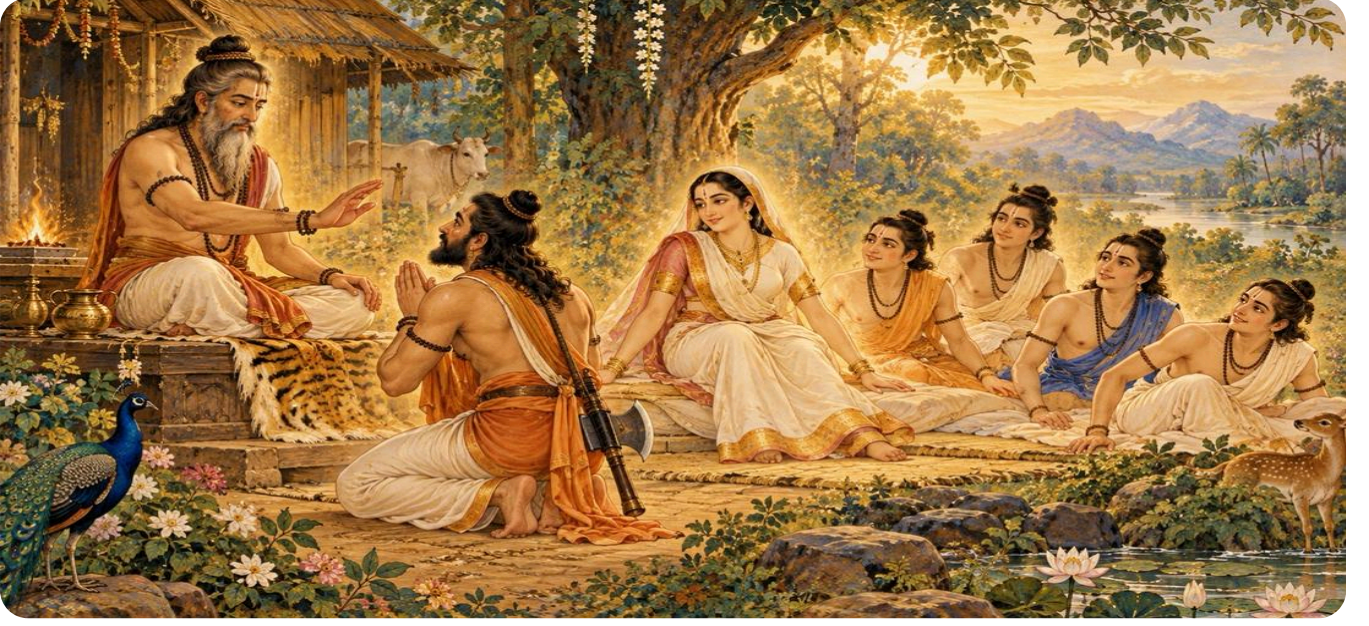
वरेणच्छन्दयामास प्रीतः सत्यवतीसुतः ।

वव्रे हतानां रामोऽपि जीवितं चास्मृतिं वधे ॥ ७ ॥

*vareṇa cchandayām āsa prītaḥ satyavatī-sutaḥ vavre hatānāṁ rāmo 'pi jīvitam cāsmṛtiṁ vadhe*

अर्थ: प्रसन्न होकर सत्यवती-पुत्र (जमदग्नि) ने उन्हें वर देने को कहा; और राम ने अपने द्वारा मारे गए लोगों के पुनर्जीवन की, और यह कि उन्हें मारे जाने की कोई स्मृति न रहे, याचना की। (नवम स्कन्ध, अध्याय 16, श्लोक 7)

तत्काल वे पुनः स्वस्थ उठ खड़े हुए, मानो निद्रा से जागे हों। परशुराम ने ऐसा केवल इसलिए किया क्योंकि वे अपने पिता की आध्यात्मिक शक्ति को जानते एवं सम्मान देते थे।



अपने पिता की कठिनतम आज्ञा का भी पालन करके, परशुराम अपने वरदान रूप में यह माँगते हैं कि उनकी माता एवं भाई बिना मृत्यु की स्मृति के पुनर्जीवित हो जाएँ — और तत्काल वे पुनः स्वस्थ उठ खड़े होते हैं, मानो निद्रा से जागे हों (श्लोक 5-8)।

## जमदग्नि की हत्या

कार्तवीर्य अर्जुन के पुत्र, अपने पिता की मृत्यु पर चिन्तन करते हुए कहीं शान्ति न पाकर, अपने अवसर की प्रतीक्षा करते रहे।

येऽर्जुनस्य सुता राजन् स्मरन्तः स्वपितुर्वधम् ।  
रामवीर्यपराभूता लेभिरे शर्म न क्वचित् ॥ ९ ॥

*ye 'rjunasya sutā rājan smarantaḥ sva-pitur vadham rāma-vīrya-parābhūtā lebhire śarma na kvacit*

अर्थ: कार्तवीर्य अर्जुन के पुत्र, परशुराम के पराक्रम से पराजित होकर, कभी क्षण-भर भी शान्ति न पा सके, क्योंकि अपने पिता की मृत्यु की स्मृति उन्हें सदा सताती रही। (नवम स्कन्ध, अध्याय 16, श्लोक 9)

फिर भी भागवत इस दुर्घटना को केवल निरर्थक हिंसा मात्र के रूप में नहीं छोड़ता। जमदग्नि जैसे महान् तपस्वी भी इस नियम से परे नहीं थे: क्रोध में आकर उन्होंने ही पहले अपनी निर्दोष पत्नी के मन के एक क्षणिक विचलन मात्र के लिए उसके वध की आज्ञा दी थी, और यह कठोर आदेश स्वयं एक ऐसा अपराध था जो अनुत्तरित नहीं रह सकता था। यहाँ की शिक्षा कठोर एवं निष्पक्ष है — चाहे ऋषि हो, योद्धा हो अथवा राजा, जो भी उतावलेपन में एवं बिना संयम के कार्य करता है, उसे समय आने पर उस कर्म का फल अवश्य भोगना पड़ता है। पवित्रता एवं तपस्या वास्तविक शक्तियाँ हैं, किन्तु वे किसी को भी उस नियम से मुक्त नहीं करतीं जो प्रत्येक कर्म को शासित करता है; केवल विनम्रता एवं आत्म-संयम ही शक्ति के जीवन को धारण करने हेतु सुरक्षित बनाते हैं।

एक दिन, जब परशुराम एवं उनके भाई वन को गए थे, वे आश्रम आए और ऋषि जमदग्नि को अग्नि-गृह में बैठे पाया, उनका मन पवित्र-कीर्ति भगवान् पर स्थिर; और उन पापी-संकल्प वालों ने उनका वध कर दिया।

दृष्ट्वाग्न्यागार आसीनमावेशितधियं मुनिम् ।  
भगवत्युत्तमश्लोके जघ्नुस्ते पापनिश्चयाः ॥ ११ ॥

*dṛṣṭvāgny-āgāra āsīnam āveśita-dhiyaṁ munim bhagavatya uttamaśloke jaghnus te pāpa-niścayāḥ*

अर्थ: ऋषि को अग्नि-गृह में बैठे, उनका मन सर्व-गौरवमय भगवान् में लीन देखकर, उन पापी-संकल्प वालों ने उनका वध कर दिया। (नवम स्कन्ध, अध्याय 16, श्लोक 11)



जब परशुराम वन में थे, कार्तवीर्य अर्जुन के प्रतिशोधी पुत्र ऋषि जमदग्नि को उनके अग्नि-गृह में बैठे, उनका मन भगवान् में लीन, पाते हैं — और वहाँ अपना घोर अपराध करते हैं (श्लोक 9-12)।

रेणुका ने अत्यन्त करुण प्रार्थनाओं से अपने पति के प्राणों की भीख माँगी, किन्तु कार्तवीर्य अर्जुन के पुत्रों ने, जो सच्चे क्षत्रिय-गुणों से रहित थे, कोई दया न दिखाई: उन्होंने ऋषि का सिर धड़ से अलग करके उसे अपने साथ ले लिया (श्लोक 12)।

व्यथा में स्वयं को पीटती हुई, सती रेणुका बार-बार पुकार उठीं, “राम! हे राम! आओ, प्रिय पुत्र!”

रेणुका दुःखशोकार्ता निघ्नन्त्यात्मानमात्मना ।  
राम रामेति तातेति विचुक्रोशोच्चकैः सती ॥ १३ ॥

*reṇukā duḥkha-śokārtā nighnanty ātmānam ātmanā rāma rāmeti tāteti vicukrośoccaiḥ sati*

अर्थ: शोक एवं व्यथा से पीड़ित एवं अपने ही हाथों से स्वयं को पीटती हुई, सती रेणुका ऊँचे स्वर में पुकार उठीं, “राम! हे राम! हे प्रिय पुत्र!” (नवम स्कन्ध, अध्याय 16, श्लोक 13)

दूर से वह पुकार सुनकर, परशुराम शीघ्र लौटे और अपने पिता को मृत पाया। शोक एवं धर्ममयी क्षोभ से अभिभूत, उन्होंने शव अपने भाइयों को सौंपा और पृथ्वी को अधर्मी क्षत्रिय-राजाओं से मुक्त करने का संकल्प किया।



व्यथा में स्वयं को पीटती हुई, शोकग्रस्त रेणुका "राम! हे राम!" पुकार उठती हैं — और परशुराम, दूर से सुनकर, अपने प्रिय पिता को मृत पाने घर की ओर दौड़ पड़ते हैं (श्लोक

13-16)।

## पृथ्वी का शुद्धिकरण

माहिष्मती जाकर, जिसका वैभव एक ब्राह्मण-ऋषि की हत्या के पाप से नष्ट हो चुका था, परशुराम ने अपने पिता की मृत्यु को निमित्त बनाकर — क्योंकि क्षत्रिय-राजा अधर्म के मार्ग पर चल पड़े थे — पृथ्वी को अत्याचारी क्षत्रियों से इक्कीस बार मुक्त किया, समन्तपञ्चक (कुरुक्षेत्र) में उनके रक्त से भरे सरोवर बनाते हुए।

तद्रक्तेन नदीं घोरामब्रह्मण्यभयावहाम् ।  
हेतुं कृत्वा पितृवधं क्षत्रेऽमङ्गलकारिणि ॥ १८ ॥  
त्रिःसप्तकृत्वः पृथिवीं कृत्वा निःक्षत्रियां प्रभुः ।  
समन्तपञ्चके चक्रे शोणितोदान् हृदन् नव ॥ १९ ॥

*tad-raktena nadīm ghorām abrahmaṇya-bhayāvahām hetum̐ kṛtvā pitṛ-vadham̐ kṣatre 'maṅgala-kāriṇi triḥ-sapta-kṛtvaḥ pṛthivīm̐ kṛtvā niḥkṣatriyām̐ prabhuḥ samanta-pañcake cakre śoṇitodān hradān nava*

अर्थ: अपने पिता की हत्या को निमित्त बनाकर — क्योंकि क्षत्रिय-वर्ग अधर्म पर उतर आया था — शक्तिशाली प्रभु ने पृथ्वी को अत्याचारी क्षत्रियों से इक्कीस बार मुक्त किया, और समन्तपञ्चक में उनके रक्त से भरे सरोवर बनाए। (नवम स्कन्ध, अध्याय 16, श्लोक 18-19)



अपने पिता की हत्या पर शोक एवं धर्ममयी क्रोध में, भगवान् परशुराम अपना परशु उठाते हैं और पृथ्वी को उसका भार बने अत्याचारी, अधर्मी क्षत्रिय-राजाओं से मुक्त करने का संकल्प करते हैं (श्लोक 16-19)।

## जमदग्नि का पुनर्स्थापन और महेन्द्र की शान्ति

अपने पिता का सिर वापस लाकर एवं उसे उनके शरीर से जोड़कर, परशुराम ने भगवान् — अपने ही सच्चे स्वरूप — की अनेक यज्ञों द्वारा आराधना की, पूर्व दिशा होता को, दक्षिण ब्रह्मा को, पश्चिम अध्वर्यु को, उत्तर उद्गाता को, कोने अन्य पुरोहितों को, और मध्य क्षेत्र ऋषि कश्यप को देते हुए। अन्ततः सरस्वती में स्नान करके, वे निर्मल सूर्य के समान चमके, उनका समस्त पाप धुल गया। जमदग्नि, एक पूर्णतः आध्यात्मिक शरीर पुनः पाकर, सप्तर्षियों में सातवें बने।

स्वदेहं जमदग्निस्तु लब्ध्वा संज्ञानलक्षणम् ।

ऋषीणां मण्डले सोऽभूत् सप्तमो रामपूजितः ॥ २४ ॥

*sva-deham jamadagnis tu labdhvā sañjñāna-lakṣaṇam ṛṣīṇāṃ maṇḍale so 'bhūt saptamo rāma-pūjitaḥ*

अर्थ: जमदग्नि, शुद्ध चेतना से युक्त एक शरीर पुनः पाकर, परशुराम द्वारा पूजित होकर, सप्तर्षियों के मण्डल में सातवें बने। (नवम स्कन्ध, अध्याय 16, श्लोक 24)



परशुराम की आराधना से एक पूर्णतः आध्यात्मिक शरीर पुनः पाकर, ऋषि जमदग्नि उन सात महान् ऋषियों में अपना स्थान लेते हैं जो ब्रह्माण्ड के कल्याण की देखरेख करते हैं (श्लोक 20-24)।

परशुराम स्वयं, शुकदेव ने कहा, आने वाले मन्वन्तर में सप्तर्षियों में से एक के रूप में वेदों का प्रसार करेंगे — और अपना कार्य पूर्ण करके, वे आज उसी पर्वत पर अखण्ड शान्ति में निवास करते हैं, सिद्धों, गन्धर्वों एवं चारणों के गीतों में सम्मानित।

आस्तेऽद्यापि महेन्द्राद्रौ न्यस्तदण्डः प्रशान्तधीः ।  
उपगीयमानचरितः सिद्धगन्धर्वचारणैः ॥ २६ ॥

*āste 'dyāpi mahendrādrau nyasta-daṇḍaḥ praśānta-dhīḥ upagīyamāna-caritaḥ siddha-gandharva-cāraṇaiḥ*

अर्थ: आज भी वे महेन्द्र पर्वत पर विराजते हैं, उनका अस्त्र त्यागा हुआ एवं मन पूर्णतः शान्त, उनके कर्म सिद्धों, गन्धर्वों एवं चारणों द्वारा गाए जाते हुए। (नवम स्कन्ध, अध्याय 16, श्लोक 26)

## विश्वामित्र का वंश

तत्पश्चात् शुकदेव ने गाधि के पुत्र, महातेजस्वी विश्वामित्र की बात कही, जो प्रज्वलित अग्नि के समान थे, जिन्होंने अपना क्षत्रिय-स्वभाव त्यागकर तपस्या से ब्राह्मण-तेज प्राप्त किया।

गाधेरभून्महातेजाः समिद्ध इव पावकः ।  
तपसा क्षात्रमुत्सृज्य यो लेभे ब्रह्मवर्चसम् ॥ २८ ॥

*gādher abhūn mahā-tejāḥ samiddha iva pāvakaḥ tapasā kṣātram utsṛjya yo lebhe brahma-varcasam*

अर्थ: गाधि से महातेजस्वी विश्वामित्र उत्पन्न हुए, प्रज्वलित अग्नि के समान, जिन्होंने तपस्या से अपना क्षत्रिय-स्वभाव त्यागकर ब्राह्मण की महिमा प्राप्त की। (नवम स्कन्ध, अध्याय 16, श्लोक 28)

विश्वामित्र के एक सौ एक पुत्र थे; बीच वाले का नाम मधुच्छन्दा था। उन्होंने शुनःशेष को गोद लिया — वह बालक जो कभी राजा हरिश्चन्द्र के यज्ञ में बलि-पशु होने को नियत था, और देवताओं की स्तुति करके बचा — उसे देवरात नाम देकर, और अपने पुत्रों से उसे ज्येष्ठ मानने को कहा। जिन पचास बड़े पुत्रों ने इनकार किया वे म्लेच्छ हो जाने का शाप पाए, जबकि छोटे, मधुच्छन्दा के नेतृत्व में, देवरात को सहर्ष स्वीकार करके आशीर्वादित हुए। इस प्रकार कुशिक का वंश अनेक शाखाओं में विभक्त हुआ।

## इस अध्याय की प्रमुख शिक्षाएँ

1. सच्चे मार्गदर्शक की आज्ञा का पालन एक आध्यात्मिक शक्ति है। परशुराम अपने पिता की कठिनतम आज्ञा का भी पालन करते हैं, ऋषि के ज्ञान पर विश्वास करते हुए — और उनके आज्ञापालन का मुकुट वह वरदान बनता है जो उनके परिवार को पुनर्जीवित करता है। एक सच्चे अधिकारी में विश्वास दुर्बलता नहीं बल्कि शक्ति है (श्लोक 5-8)।
2. पवित्र के विरुद्ध अपराध भयंकर विनाश लाते हैं। कार्तवीर्य अर्जुन के पुत्रों द्वारा ऋषि जमदग्नि की हत्या एक प्रलय को छोड़ देती है। भगवान् के सेवकों को हानि पहुँचाना स्वयं पर विनाश को आमन्त्रित करना है (श्लोक 9-19)।
3. धर्ममयी क्रोध को भी अन्ततः रख देना चाहिए। परशुराम का प्रचण्ड मिशन अनन्त क्रोध में नहीं बल्कि प्रायश्चित्त, यज्ञ, और अस्त्र त्यागने में समाप्त होता है। अध्याय दिखाता है कि हिंसा, न्यायसंगत होने पर भी, लक्ष्य नहीं बल्कि एक भार है जिसे रख देना है (श्लोक 20-26)।
4. कृपा उसे पुनर्स्थापित करती है जो अपरिवर्तनीय रूप से खोया प्रतीत होता है। मारा गया परिवार पुनः जी उठता है; मारा गया ऋषि सप्तर्षियों में पुनर्स्थापित होता है। हानि कितनी भी अन्तिम क्यों न प्रतीत हो, भगवान् की कृपा मृत्यु से जीवन ला सकती है (श्लोक 7-8, 24)।
5. हम जो हैं, वह प्रयास से निश्चित होता है, केवल जन्म से नहीं। विश्वामित्र, एक योद्धा जन्मे, तपस्या से ब्राह्मण बनते हैं; शुनःशेष, बलि के लिए बेचे गए, एक पूज्य ऋषि बनते हैं। अध्याय पुष्टि करता है कि सच्चा आध्यात्मिक प्रयास किसी के स्वभाव को ही रूपान्तरित कर सकता है (श्लोक 28-32)।

## एक भक्तिपूर्ण चिन्तन

यह एक कठिन अध्याय है, शोक एवं रक्त से भरा, और भागवत अपने कथन को कोमल नहीं करता — एक माता का विचलन, एक पिता की कठोर आज्ञा, प्रार्थना में लीन एक ऋषि की हत्या, और एक प्रतिशोधी पुत्र जो पृथ्वी को अत्याचारियों से इक्कीस बार मुक्त करता है। फिर भी यदि हम ध्यान से सुनें, यह अध्याय अन्ततः प्रतिशोध के विषय में है ही नहीं; यह परशु रख देने के विषय में है। परशुराम की भयंकर शक्ति वास्तविक है, किन्तु वह कभी उनके जीवन का सार नहीं; बार-बार कथा पुनर्स्थापन की ओर मुड़ती है — परिवार मृत्यु से उठाया गया, पिता पुनः जोड़ा गया एवं सप्तर्षियों में उठाया गया, और अन्ततः स्वयं योद्धा महेन्द्र पर्वत पर पूर्ण शान्ति में बैठे, उनका अस्त्र रखा हुआ, उनका मन शान्त। जो भगवान् पृथ्वी का भार हरने के लिए अवतरित हुए, वे क्रोध की मूर्ति नहीं रह जाते; वे स्थिरता की मूर्ति बन जाते हैं, उनकी हिंसा समाप्त,

उनका हृदय भगवान् में विश्रान्त। और इस चाप के चारों ओर अध्याय अपनी शान्त आशाएँ बिखेरता है: कि कृपा खोए को पुनर्स्थापित कर सकती है, कि एक योद्धा भी ऋषि बन सकता है, कि बलि के लिए बेचा गया बालक भी ऋषि बन सकता है। सबसे गहरी शिक्षा शायद सबसे कोमल है — कि सबसे प्रचण्ड शक्ति का भी लक्ष्य शान्ति है, और कि सच्ची विजय वही है जिसमें तलवार अन्ततः भगवान् के चरणों में रख दी जाती है।

## एक दैनिक भक्ति-अभ्यास

आज, महेन्द्र पर्वत पर परशुराम के अपना परशु रख देने की भावना में, अपना कोई “अस्त्र” रखने का अभ्यास करें — कोई रोष जो आपने ढोया है, कोई क्रोध जिसे आप न्यायसंगत मानते हैं, कोई द्वेष जिसे आप तीखा रखते हैं। यदि क्रोध धर्ममय भी प्रतीत हो, उसे अर्पित करें: शान्त बैठें, श्वास लें, और सचेत रूप से उसे भगवान् के चरणों में रख दें, मृदुता से दोहराते हुए, “ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।” जमदग्नि की अपनी शिक्षा स्मरण करें कि पवित्र की महिमा क्षमा से चमकती है, और कि भगवान् हरि क्षमाशील से शीघ्र प्रसन्न होते हैं। छोड़ने का एक कार्य — एक क्षमा, एक रोका गया कठोर शब्द, सही होने पर चुनी गई शान्ति — आज आपकी पूजा बने, यह विश्वास करते हुए कि सबसे गहरी शक्ति अस्त्र रख देने की शक्ति है।

## उपसंहार

नवम स्कन्ध का सोलहवाँ अध्याय भगवान् परशुराम को शान्ति में विराजमान दिखाकर समाप्त होता है: उनका भयंकरतम कार्य पूर्ण, उनका अस्त्र रखा हुआ, उनका हृदय उसी भगवान् में विश्रान्त जिनकी सेवा के लिए वे अवतरित हुए थे। इसकी सबसे गहरी शिक्षा यही है — कि सबसे प्रचण्ड शक्ति भी तभी अपनी पूर्णता पाती है जब वह अन्ततः भगवान् के चरणों में रख दी जाती है, और कि कोई भी तपस्या, चाहे कितनी भी महान् हो, आत्मा को कर्म के नियम से मुक्त नहीं करती; केवल विनम्रता ही शक्ति को धारण करने हेतु सुरक्षित बनाती है। हम भी सीखें कि जो भी अस्त्र हम उठाए हुए हैं उसे रख दें, और समर्पण में वही शान्ति पाएँ जो परशुराम ने महेन्द्र पर्वत पर पाई।

श्रीमद्भागवत का दिव्य ज्ञान हमारे हृदयों में शुद्ध भक्ति को जागृत करे।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

जय श्री माधव।

## सन्दर्भ एवं आभार

- मुख्य संस्करण: गीता प्रेस, श्रीमद्भागवत महापुराण, नवम स्कन्ध, षोडश अध्याय।
- शृंखला: श्रीमद्भागवत विज्डम • विश्व सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट।
- पण्डित डॉ. श्री काशीनाथ मिश्र के आध्यात्मिक मार्गदर्शन एवं संस्तुति के अनुसार प्रस्तुत।

यह लेखक के अपने शब्दों में एक मौलिक, श्रद्धापूर्ण पुनर्कथन है, जिसमें संक्षिप्त उद्धृत श्लोक देवनागरी एवं लिप्यन्तरण में दिए गए हैं और उनके अर्थ सारांश रूप में। यह किसी एक प्रकाशक के निरन्तर अनुवाद या टीका का पुनरुत्पादन नहीं है।

॥ हरि ॐ तत्सत् ॥

जय श्री माधव

ऑनलाइन पढ़ें: [kalkiabatara.org/hi/blog-srimad-bhagavatam-canto-9-chapter-16-parashurama-destroys-ruling-class-hi.html](http://kalkiabatara.org/hi/blog-srimad-bhagavatam-canto-9-chapter-16-parashurama-destroys-ruling-class-hi.html)

श्रीमद्भागवतम् विज्ञम • कल्कि अवतार इंटरनेशनल • बिस्व सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट

